प्रकाशन तिथि : 01 अक्टूबर, 2022
प्रेषण तिथि : 04 अक्टूबर, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 14 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

सौहार्दपूर्ण वातावरण से ही भारत बनेगा विश्वगुरु: सरवड़ी

(चित्तौड़गढ़ में किसान सम्मेलन संपन्न)

हम सभी उस परम तत्व की संतान हैं इसलिए हम सभी भाई-बहिन हैं, लेकिन जो पारिवारिक भाव हमारे बीच होना चाहिए वह आज नहीं है। उस पारिवारिक भाव को कम करने के लिए अपसंस्कृतियों और विभिन्न स्वार्थी तत्वों द्वारा इस प्रकार का वातावरण बनाया गया, उसी के कारण यह सब दिक्कत हुई। लेकिन अगर वातावरण खराब बना कर पारिवारिक भाव को खत्म किया गया है तो उस वातावरण को सुधार कर उस पारिवारिक भाव को जागृत भी किया जा सकता है। ऐसा करने की जिम्मेदारी हमारी है, किसी दूसरे की नहीं। आज तो स्थिति यह हो गई है कि परिवार में भाई भी आपस में इस तरह से लड़ते हैं जैसे दुश्मन हों। जैसे परिवार में एकता नहीं है वही हाल सभी जातियों में भी है। कोई भी जाति ऐसी नहीं है जहां तरह-तरह के झगड़े नहीं हों, जहां संगठन आपस में उलझ नहीं रहे हों और राजनीतिक पार्टियों में भी यही हालत है जहां सब एक दूसरे की टांग खींच रहे हैं। यही हाल पूरे राष्ट्र में हो रहा है और इसीलिए वो सौहार्द हमने खो दिया, वो प्रेमभाव हमने खो दिया जिसके कारण भारत को सोने की चिड़िया और विश्वगुरु कहा जाता था। वह भाव हममें पुनः जागृत होना चाहिए और उसे जागृत करने का दायित्व हमारा है, किसी दूसरे का नहीं। हम किसी को क्यों दोष दें? सरकारों को हम दोष देते हैं कि हमारी मांगे नहीं मानी गई लेकिन वह हमारी प्राथमिकता नहीं होनी चाहिए, हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए कि हमारे देश में, हमारे समाज में, जहां हम रहते हैं हम भाई-भाई की तरह रहें, कोई एक दूसरे से लड़े नहीं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अनिल चौहान बने देश के दूसरे सीडीएस

सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान को भारत का दूसरा चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) नियुक्त किया है। वे रक्षा मंत्रालय में सेना मामलों के सचिव के रूप में भी कार्य करेंगे। 31 मई 2021 को सेवानिवृत्त हुए चौहान केन्द्रीय विद्यालय कोलकाता एवं राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला और भारतीय सैन्य अकादमी के पूर्व छात्र हैं। (शेष पृष्ठ 6 पर)

आशु सिंह लाछड़ी प्रख्यात इंजीनियर अवार्ड से सम्मानित

भारतीय अभियांत्रिकी सेवा के अधिकारी आशु सिंह लाछड़ी को 15 सितंबर को इंजीनियर्स दिवस के अवसर पर इंजीनियर्स संस्थान भारत द्वारा सम्मानित किया गया। इनको यह सम्मान (शेष पृष्ठ 6 पर)

26 शिविरों के माध्यम से 3000 शिविरार्थियों में क्षत्रियोचि संस्कारों का सिंचन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला अनवरत चल रही है। इसी के तहत 12 से 28 सितंबर की अवधि में देश भर में विभिन्न स्थानों पर 26 शिविरों का आयोजन हुआ जिनमें चार बालिका शिविर भी सम्मिलित है। इनमें 3000 से अधिक शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। नागौर संभाग में मेड़ता रोड स्थित मरुधर डिफेंस सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रांगण में 23 से 26 सितंबर तक चार दिवसीय शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने कहा कि क्षत्रिय के जीवन का उद्देश्य विश्वात्मा के कार्यों में सहभागी बनकर मानवता के कल्याण में अपना जीवन लगाना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तन सिंह जी ने इसी उद्देश्य से संघ की स्थापना की और अपनी तपस्या के द्वारा समाज को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने की एक सुदृढ़ प्रणाली प्रदान की। किशन सिंह व गजेंद्र सिंह चांपावत ने स्थानीय समाजबंधुओं के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिविर में बस्सी, मेड़ता रोड़, रासलियावास, कूंपड़ास, गगराना, छापड़ा, देऊ, दातीणा, खारी कर्मसोता, मुंगेरिया, नवातला, श्री चार भुजा राजपूत छात्रावास मेड़ता सिटी, बाकलियावास, हरसोलाव, दधवाड़ा, ओलादन, नेणिया, अमर राजपूत छात्रावास नागौर, छापरी, भाटियों की ढाणी व हरसोलाव से 229 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। जोधपुर संभाग के भोपालगढ़ प्रान्त के रामासनी गांव में भी चार दिवसीय शिविर इसी अवधि में आयोजित हुआ। (शेष पृष्ठ 2 पर)

'भविष्य की महानता के लिए धरातल का निर्माण कर रहा है संघ'

(जोबनेर शाखा में मिला संघप्रमुख श्री का सान्निध्य)

भगवान राम व कृष्ण जैसे महान व्यक्तित्वों के अवतरण के लिए अनुकूल धरातल का निर्माण होना आवश्यक है और किसी समाज में ऐसे आधार का निर्माण तपस्या और साधना से ही संभव है। वर्तमान में ऐसे धरातल का निर्माण यदि कहीं हो रहा है तो वह श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा व शिविरों में ही हो रहा है। एक अनगढ़ पत्थर की कोई कीमत नहीं होती और हथौडी व छैनी की चोट सहन करने पर वही अनगढ़ पत्थर सुंदर और बहुमूल्य मूर्ति में बदल जाता है। उसी प्रकार अपनी संस्कारमयी कर्म प्रणाली रूपी छैनी-हथौड़ी के प्रयोग द्वारा समाज के युवाओं को गढ़कर संस्कारित बनाने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ 76 वर्षों से कर रहा है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

26 शिविरों के माध्यम से 3000 शिविरार्थियों में क्षत्रियोचि संस्कारों का सिंचन

डांगरी

पुणे

बूंदी

(पेज एक से लगातार)

शिविर का संचालन करते हुए भरतपाल सिंह दासपा ने शिविरार्थियों से अपने दायित्व को पहचान कर उसे पूरा करने के लिए निरंतर कार्य करने की बात कही। शिविर में रामासनी, हुनगांव, खारिया खंगार, मेरासिया के 80 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर में वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायण सिंह पालड़ी सिद्धा का भी सानिध्य रहा। जोधपुर शहर प्रान्त के देवलिया गांव में भी इसी अवधि में शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर संचालक सांवतसिंह उंचाइड़ा ने विदाई उद्बोधन में कहा कि इस शिविर में अर्जित की गई साधना शक्ति को बचाने के लिए आपको निरंतर शाखाओं व शिविरों में आना होगा। जोधपुर शहर के हनवंत छात्रावास, रामदेव छात्रावास, नाहर सिंह नगर (तेना), बेलवा, डिगाड़ी, देवलिया गांवों के 100 स्वयंसेवको ने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। संभाग के फलौदी-ओसियां प्रांत के बाप मंडल में राम चिलानाडा सिड्डा गांव में भी 24 से 27 सितंबर तक शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन गणपत सिंह अवाय ने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ अभ्यास के द्वारा हमें क्षात्र धर्म का पालन करना सिखाता है। शिविर में उदट, गुड़ा, सेखाला, अवाय, कल्याण सिंह की सिड, मालम सिंह की सिड, हदा, पीलवा, बारू, धोलिया, मेडी का मगरा, भोजों की बाप, केतु आदि गांवों के कुल 130 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था में पूर्व प्रधान मग सिंह सिड्डा, भंवर सिंह सिड्डा व ग्रामवासियों ने सहयोग किया। बाड़मेर स्थित भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट के परिसर में 23 से 26 सितंबर तक बालिकाओं का चार दिवसीय शिविर संपन्न हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक राम सिंह माडपुरा के निर्देशन में शिविर का संचालन करते हुए कैलाश कंवर मुंगेरिया ने बालिकाओं से कहा कि स्त्री की तपस्या और त्याग से ही कोई परिवार सुखी, समृद्ध और संस्कारित बनता है। संघ के संरक्षक महोदय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर का सान्निध्य भी बालिकाओं को प्राप्त हुआ। बालोतरा, समदड़ी, सिवाना, हरसाणी, गंगासरा, फागलिया, सणाऊ, बूठ, आकोडा, बिजावल, ताणु व बाडमेर शहर की 300 बालिकाओं ने शिविर में प्रशिक्षण लिया। इसी अवधि में एक शिविर चौहटन प्रांत में श्री गुरुकुल विद्यामंदिर बाखासर में आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए संभाग प्रमुख महिपालसिंह चूली ने कहा कि हमारे जीवन का उद्देश्य केवल पेट पालना नहीं है, बल्कि स्वधर्म के अनुरूप कर्म करते हुए परमात्मा की प्राप्ति करने में ही इस जीवन की सार्थकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें इसी ओर ले जाता है। शिविर में बाखासर, साता, वेरडी, अरटी, गंगासरा, फागलिया, सोमराड, ढेंबा, जालीला, सिंहार, सालारिया, आकोडा, सनाऊ गांवों के अतिरिक्त श्री मल्लीनाथ छात्रावास बाडमेर, श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग चोहटन से कुल 165 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाड़मेर में ही गडरारोड ब्लॉक के बिजावल गाँव में भी इसी अवधि में शिविर सम्पन्न हुआ। श्री नखत बन्ना धाम बिजावल के प्रांगण में आयोजित शिविर का संचालन करते हुए छगन सिंह लूणू ने कहा कि संघ अपने शिविरों के माध्यम से समाज के बालकों में क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण कर रहा है। शिविर में गडरारोड क्षेत्र के सुन्दरा, बिजावल, गडरारोड, बखतपुरा, हीरपुरा, जयसिंधर, कमालानी, उगेरी, द्राभा आदि गाँवों के 65 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बायतु प्रांत के कोलू गांव में भी 24 से 27 सितंबर की अवधि में शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए मनोहर सिंह सिणेर ने कहा कि संघ में जो शिक्षण आपने प्राप्त किया है वह आपके व्यवहार, आपकी वाणी, आपके रहन-सहन और आपके आचरण के प्रत्येक अंग में झलकना चाहिए। शिविर में क्षेत्र के लगभग 200 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बून्दी में राजपूत सोशल वॉरियर्स संस्थान के तत्वावधान में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय शिविर जैत सागर झील किनारे अमर बाग में 23 से 26 सितंबर तक सम्पन्न हुआ जिसमें बून्दी, झालावाड़, व अजमेर जिलों के 72 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर में राजपूतों के गौरवशाली अतीत व इतिहास की जानकारी दी गई तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ की 75 वर्षों की यात्रा से बालकों को अवगत कराया गया। शिविर का संचालन जितेंद्र सिंह

कोलू

रामासनी

देवली ने किया। पूर्वी राजस्थान संभाग में अलवर के खोहर गांव में जांगिड़ धर्मशाला में भी चार दिवसीय शिविर संपन्न हुआ। संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों को क्षत्रिय के गुणों एवं इतिहास के बारे में बताया, साथ ही समाज-चरित्र की परिभाषा बताते हुए अपने सामाजिक उत्तरदायित्व से भी परिचित कराया। शिविर में अलवर जिले के 60 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। धर्मवीर सिंह, धर्मेंद्र सिंह, हरि सिंह, रामनिवास आदि ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। शेखावाटी संभाग के चुरू प्रांत में लम्बोर बड़ी स्थित सरस्वती शिक्षण संस्थान में भी 23-26 सितंबर तक शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए संभागप्रमुख खींव सिंह सुल्ताना ने कहा कि अर्जित ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए ज्ञान के स्रोत के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखना आवश्यक है। इसलिए संघ की शाखाओं एवं शिविरों में निरंतर आते रहना जरूरी है। शिविर में लम्बोर, मीतासर, गोगामेड़ी आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मान सिंह लम्बोर बड़ी ने ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी प्रकार एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर श्री आंजनेश्वर महादेव जी मंदिर, आंजना देवगढ़ में भी इसी अवधि में आयोजित हुआ। शिविर में राजसमन्द, पाली, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, जालोर, प्रतापगढ़, सीकर, भीलवाड़ा जिलों से 125 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संभाग प्रमुख भँवर सिंह बेमला ने शिविर का संचालन करते हुए कहा कि इस शिविर में आप द्वारा सीखी अच्छी बातों को जीवन में ढाल कर श्रेष्ठ नागरिक बनें जिससे हमारा जीवन समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बन सके। राजपूत सेवा संस्थान, नीमझर प्रान्त के सदस्यों ने व्यवस्था में सहयोग किया। राजसमंद जिले के नाथद्वारा में बालिकाओं का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर भी इसी अवधि में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि पूज्य तन सिंह जी का संकल्प श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में 76 वर्षों से अनवरत गति से चल रहा है, जो अब वट वृक्ष का रूप धारण कर रहा है। शिविर में राजसमंद, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा व जयपुर जिले की 270 बालिकाओं ने भाग लिया। महाराणा प्रताप छात्रावास के अध्यक्ष भीम सिंह कल्ला खेड़ी, सुमेर सिंह पिपलिया, हरदयाल सिंह कुचोली, रघुराज सिंह सोडावास, दशरथ सिंह राती तलाई आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। चित्तौड़गढ़ जिले की भदेसर तहसील में धनेश्वर महादेव मंदिर परिसर में भी इसी अवधि में शिविर आयोजित हुआ जिसका संचालन करते हुए टैंकबहादुर सिंह गेहूंवाड़ा ने कहा कि संघ हमें सच्चा क्षत्रिय बनने का शिक्षण दे रहा है। शिविर में नरधारी, सांवलपुरा, चरपोटिया, शिवपुरा, करेड़िया, मान जी का गुड़ा, कास्या कला, धनेत, निंबाहेड़ा, बांसा, कांकरिया, कृष्णावतो की खेड़ी, सहाड़ा, घटियावली, भाटियों का खेड़ा, चौहानों का कंथारिया, नेतावल गढपाछली, मानसिंह का खेड़ा (भीलवाड़ा), टाँक, गुढा रामसिंह (पाली), कुकनवाली (नागौर), गेहूंवाडा, वालाई, सलाडिया, काकाजी का गड़ा (डूंगरपुर) आदि गांवों के 51 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। नरेन्द्रसिंह एवं जीवनसिंह नरधारी ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। बीकानेर संभाग में श्री डूंगरगढ़ प्रान्त के कोटासर गांव के श्री करणी माता मंदिर में भी प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए राजेन्द्र सिंह आलसर ने कहा कि यहां हम सभी ने जिस व्यवस्थित दिनचर्या का अभ्यास किया है उसे निरंतर अपने जीवन में बनाए रखें, तभी हमारे जीवन में अपेक्षित परिवर्तन आ सकेगा। शिविर में तहसील क्षेत्र के गांव झंझेऊ, पुन्दलसर, जोधासर, लखासर, श्रीडूंगरगढ़, गुंसाईसर, कोटासर, बीकानेर, रायसर आदि गांवों के 80 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बीकानेर के ही गिराजसर गांव स्थित नखत बन्ना धाम परिसर में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर इसी अवधि में संपन्न हुआ। संभाग प्रमुख रेवंतसिंह जाखासर ने शिविर का संचालन करते हुए शिवरार्थियों से कहा कि समाज जागरण के पुनीत कार्य में हम सभी को मिलकर सहयोग करना है। गिराजसर, पैथडो की ढाणी, मेड़ी का मगरा, हिराई, जेतुगो की ढाणी, पंच पीठों की ढाणी, गड़ियाला आदि गांवों के 80 स्वयंससेवकों ने शिविर में प्रशिक्षण लिया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

मेड़ता रोड

बिजावल

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय
श्री तनेसिंह सोढा,
व्याख्याता (इतिहास)
निवासी काठा, जैसलमेर को
राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान
से सम्मानित होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

रतनसिंह पुत्र खीम सिंह जी बडोड़ागांव	बूल सिंह पुत्र गेमर सिंह जी बडोड़ागांव	सुरतान सिंह पुत्र कमलसिंह जी मते का तला	बलवंत सिंह पुत्र खेत सिंह जी मूलाना
भोजराज सिंह पुत्र सालम सिंह तेजमालता	बलवंत सिंह पुत्र हुकम सिंह जी मूलाना	गणपत सिंह पुत्र खींवराजसिंह जी मूलाना	चंदन सिंह पुत्र हरि सिंह जी मूलाना
भागीरथ सिंह पुत्र शैतानसिंह जी मूलाना	भोपाल सिंह पुत्र शेर सिंह जी सितोड़ाई	गंग सिंह पुत्र दीप सिंह जी सितोड़ाई	छोटू सिंह पुत्र ओनाड़ सिंह जी मसूरिया
गुलाब सिंह पुत्र तनेरावसिंह जी कीता	सुरेंद्र सिंह पुत्र शैतान सिंह जी भिंयाड़	नरेंद्र सिंह पुत्र खींव सिंह जी करड़ा	खेत सिंह पुत्र सुजान सिंह जी बैरसियाला
रैंवत सिंह पुत्र भंवर सिंह जी भिंयासर	समुन्द्र सिंह पुत्र मनोहरसिंह जी केशर सिंह का तला	हरि सिंह पुत्र नारायण सिंह जी म्याजलार	दिलीप सिंह पुत्र पदम सिंह जी रैंवतसिंह की ढाणी

संपादकीय

संवाद से सत्य का विलोपन और भारतीयता की दुर्दशा

सामाजिकता और सामुदायिकता मानव के अंतर्निहित स्वभाव की नैसर्गिक अभिव्यक्ति है। मनुष्य चाहे आदिम स्वरूप में जंगलों में रह रहा हो या आधुनिक तकनीकों से युक्त सर्व सुविधा संपन्न शहरों में, उसके द्वारा इस सामाजिकता और सामुदायिकता के निर्माण की प्रक्रिया विभिन्न रूपों में सदैव चलती रही है। परंतु पूरे संसार में यदि कहीं पर यह प्रक्रिया अपने पूर्ण विकसित और वैज्ञानिक स्वरूप को प्राप्त हुई थी तो वह भारत में ही हुई। लगभग 2400 वर्ष पूर्व ग्रीक दार्शनिक अरस्तू द्वारा मानव को सामाजिक प्राणी बताए जाने से कहीं पहले से भारतीय मनीषियों ने मनुष्य की इस प्रवृत्ति को साधना द्वारा उद्घाटित अंतर्ज्ञान से आलोकित कर-के एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था को विकसित किया जो न केवल मानव के सर्वांगीण विकास की परिपूरक थी बल्कि प्राकृतिक द्वंद्वात्मकता से उद्भूत अंतर्विरोधों को समायोजित करते हुए सनातन सत्य की तरलता के प्रवाह को अपने में बनाए रखने में सक्षम थी। इसी विशेषता के कारण भारतीय सामाजिक व्यवस्था इतने लंबे काल से अस्तित्ववान है जबकि संसार में अनेक सभ्यताएं इस दौरान बनती और बिखरती रही। सनातन और निरपेक्ष सत्य की आधारशिला पर विकसित इस व्यवस्था में मानव चेतना ने अपने उच्चतम शिखरों को छुआ और उसी चैतन्य के दीप के रूप में भारत को विश्व गुरु कहा गया।

सामाजिकता और सामुदायिकता की भावना को दिव्य चेतना से अनुप्राणित करने के इस अनूठे प्रयोग में भारत की सफलता के अनेक कारण रहे हैं लेकिन इनमें एक मुख्य कारण था भारत की सामाजिक व्यवस्था में पारस्परिक संवाद की अनौपचारिक व्यवस्था तथा इस संवाद के आधार रूप में सत्य-साधना की प्रतिष्ठा। भारतीय संस्कृति ने जनमानस को आपसी संवाद के स्वाभाविक अवसर उपलब्ध करवाए और चूंकि परम सत्य की खोज और साधना इस संस्कृति की मूल आधार रही है इसलिए उस संवाद के विषय, भाषा आदि में भी उसी सत्य की अभिव्यक्ति होती रही और इस सत्य की तरलता ने सामाजिक व्यवस्था को जड़ नहीं होने दिया। इस प्रकार यहां की सामाजिकता ने सत्य-साधना को परिपोषित किया और उस साधना से प्रवाहित सत्यधारा ने सामाजिकता को सुदृढ़ व अद्यतन किया और दोनों में परिपूरकता का यह अनूठा संबंध बना रहा।

किंतु इतनी अनूठी और विकसित व्यवस्था की आज क्या स्थिति है? हम भारत की सामाजिक व्यवस्था के वर्तमान स्वरूप का अवलोकन करें तो घोर दुर्दशा की स्थिति दिखाई देती है। इस दुर्दशा के अनेक कारणों में एक महत्वपूर्ण कारण संवाद की उपरोक्त चिर परंपरा का बाधित होना भी है। इसके बाधित होने का यह कारण नहीं है कि संवाद के अवसर उपलब्ध नहीं है अथवा संवाद की वह अनौपचारिक व्यवस्था भंग हो गई है, बल्कि वह व्यवस्था तो कमोबेश रूप में अभी भी विद्यमान है चाहे रूढ़ियों के रूप में ही सही। चाहे उत्सव और त्योहारों की परंपरा हो अथवा मंदिर और आश्रम का वातावरण हो, चाहे शोक के अवसर पर एक साथ बैठना हो अथवा मंगल आयोजनों में सामूहिक सहभागिता हो, व्यक्ति के जीवन को समाज और समुदाय से बांधने के यह तरीके उस अनौपचारिक संवाद व्यवस्था के ही अंग थे और ये अंग तो अभी भी हमारे पास किसी न किसी स्वरूप में उपस्थित है तो फिर यह विचारणीय है कि वह कौन सा तत्व हमसे खो गया है जिसके कारण हमें सभी ओर पतन और दुर्दशा दिखाई देती है।

वास्तव में जो तत्व खोया है वह है जीवन के शाश्वत सत्य के प्रति हमारी जिज्ञासा और खोज जो संवाद की इस व्यवस्था में प्रतिध्वनित होती रही थी। हम विचार करें कि आज जिस किसी भी प्रकार के संवाद में हम सहभागी बनते हैं उसमें उस सनातन सत्य और उसको पुष्ट करने वाले सामाजिक मूल्यों का कितना स्थान रहता है? उदाहरणार्थ जब हम किसी विवाह समारोह में समूह रूप में बैठकर चर्चा करते हैं तो उनके विषय क्या होते हैं? किसी शोक के अवसर पर भी एकत्रित होकर हम जीवन के सत्य के प्रति ग्रहणशील बनते हैं या उसको छोड़कर संसार के समस्त इतर विषयों पर चिंतन व चर्चा करते हैं? हमारे मंदिर, मठों और आश्रमों में क्या उस शाश्वत सत्य की साधना का कोई क्रियात्मक मार्ग संरक्षित है अथवा केवल कर्मकांड आधारित व्यापार वहां शेष रह गया है? हमारी कलात्मकता में क्या कला के स्रोत उस अनंत और अज्ञेय की झलक है या वह मात्र जीविका जुटाने और प्रशंसा पाने की साधन बनकर रह गई है? इन प्रश्नों के उत्तर में ही यह स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे संवाद तंत्र से सत्य किस प्रकार से खो गया है और परिणाम स्वरूप किस प्रकार हमारी सामाजिकता जड़ता की शिकार हुई है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि संवाद से यहां अर्थ केवल बातचीत तक सीमित नहीं है बल्कि हमारे आचरण के विभिन्न अंग जो किसी भी माध्यम से सामूहिक रूप से प्रकट होते थे वे सभी संवाद के ही रूप थे। जैसे हमारी संस्कृति में नृत्य, संगीत, काव्य जैसी अनेक कलाएं विकसित हुई वह भी इसी संवाद का एक रूप थीं, जिनमें उसी शाश्वत सत्य को अभिव्यक्त करने की ललक थी। इस दृष्टिकोण से भी यदि हम मूल्यांकन करें तो पाएंगे कि हमारे संवाद के सभी स्वरूपों से सत्य लुप्त हो गया है और साथ ही लुप्तप्रायः हो गई है सत्य-साधना की भारतीय परंपरा। सत्य और सामाजिकता की परिपूरकता खंडित हो चुकी है और उसके परिणाम स्वरूप भारतीयता की धमनियों में सत्य का प्रवाह अवरुद्ध हो गया है। आज भारतीयता को जीवित रखने के लिए इस प्रवाह को पुनः निर्बाध बनाने और सत्य व सामाजिकता की परिपूरकता को पुनर्स्थापित करने की अत्यधिक आवश्यकता है। इसके लिए हमारी सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान बहुआयामी संवाद तंत्र में हमारे पूर्वजों द्वारा अनुभूत उस जीवन सत्य को पुनः प्रतिष्ठित करना होगा जिसके आधार पर भारतीय संस्कृति विकसित हुई है और यह कार्य उपदेश या भाषणों से नहीं बल्कि उस सत्य को अपने आचरण में धारण करने वाले व्यक्तियों की कर्मठता से ही संभव है। सामाजिक मूल्यों की शुद्धि भी इसी मार्ग से संभव है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ इस प्रकार के कर्मठ व्यक्तियों के निर्माण और उनकी कर्मठता को सामूहिक स्वरूप प्रदान करने का कार्य कर रहा है।

यहां एक और बात उल्लेखनीय है कि सत्य के इस प्रवाह को निर्बाध बनाए रखने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका हमारी अर्थात क्षत्रिय कौम की रही है, क्योंकि हमने भारतीय संस्कृति में केवल रक्षक योद्धा की भूमिका ही नहीं निभाई है बल्कि न्यायकर्त्ता, प्रशासक, नेतृत्वकर्ता और मार्गदर्शक के दायित्वों को भी साथ साथ निभाया है। उदाहरणार्थ राजा, ठाकुर या साधारण राजपूत के रूप में हमारा दायित्व केवल बाहरी संकट से मातृभूमि की रक्षा करना अथवा सेना में लड़ना ही नहीं होता था बल्कि अपने आचरण से भारतीयता के उच्चतम आदर्शों को सभी के लिए अनुकरणीय बनाने का दायित्व भी हमने ही निभाया था। इसलिए यदि वे आदर्श भारतीय जनमानस के जीवन में क्षुब्ध हो गए हैं तो उसकी जिम्मेदारी भी हमारी ही है और उनको पुनर्स्थापित करने का दायित्व भी हमें ही निभाना है। यह हमारे क्षात्रधर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

श्री राजपूत सभा (जयपुर देहात) का जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

श्री राजपूत सभा (जयपुर देहात) के तत्वावधान में 25 सितंबर को फुलेरा में जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास की उपस्थिति में संपन्न हुआ। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि समाज में अनेक व्यक्तियों द्वारा अनेक प्रकार से समाज हित में कार्य किया जा रहा है। कोई धन के द्वारा, कोई सामाजिक संस्थाओं में समय देकर और कोई अपने अन्य संसाधनों द्वारा समाज की सेवा करता है लेकिन व्यक्ति के उत्थान के साथ-साथ उसका संस्कारित होना भी आवश्यक है। यदि व्यक्ति संस्कारित नहीं है तो उसका व्यक्तित्व अर्थहीन है। संस्कारित व्यक्तियों से बना समाज ही उन्नति की ओर बढ़ सकता है, इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में क्षत्रियोचित संस्कारों के निर्माण को अपना मुख्य ध्येय बनाकर कार्य कर रहा है। सांसद राज्यवर्धन सिंह राठौड़, महंत प्रताप पुरी, बालक नाथ महाराज, राजपूत सभा के अध्यक्ष रामसिंह चंदलाई ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने समाज, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए मिलकर कार्य करने और युवाओं के चरित्र निर्माण को महत्त्व देने की बात कही। कार्यक्रम में नरपत सिंह रावल, संग्राम सिंह जोबनेर, श्याम सिंह मुंडा, बलबीर सिंह, मोती सिंह, धीर सिंह, गोपाल सिंह रोजदा, मेघराज सिंह, नरपत सिंह सहित अनेकों गणमान्य समाज बंधु उपस्थित रहे।

बारडोली (सूरत) में स्नेहमिलन संपन्न

गुजरात में सूरत के निकट बारडोली के साकडी गांव स्थित श्री स्वामीनारायण मंदिर में दक्षिण गुजरात राजपूत संकलन समिति तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ के संयुक्त तत्वावधान में स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन 24 सितंबर को किया गया। कार्यक्रम में दक्षिण गुजरात राजपूत समाज के तमाम संगठनों ने भाग लिया। संघ के सूरत प्रांत प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा ने उपस्थित समाज बंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली से परिचित कराया एवं कहा कि वर्तमान के विषमय वातावरण में हम अपने समाज में अपने स्वधर्म का पालन किस प्रकार से कर-के अपने आपको किस प्रकार अधोगति में जाने से रोक सकते हैं, यह बात श्री क्षत्रिय युवक संघ सिखाता है। सभी संगठन अपनी अपनी क्षमता अनुसार संगठित होने की बात कहते हैं पर संघ संगठित होने के साथ-साथ संस्कारित होने की बात करता है। संघ की प्रणाली का आधार गीता है। गीता में अभ्यास का महत्व बताया गया है उसी के अनुरूप संघ नियमितता व निरंतरता के साथ समाज मे कार्य कर रहा है। उन्होंने शाखा में संस्कार निर्माण का कार्य किस प्रकार होता है, इसकी जानकारी दी एवं मंच पर सांकेतिक शाखा लगाकर संघ की कार्यप्रणाली की झलक प्रदर्शित की। केतन सिंह चलथान ने कार्यक्रम को पूज्य तनसिंह जी व संघ का परिचय दिया और कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के समाज में संस्कार निर्माण के कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर वर्तमान समय में संस्कार निर्माण की महती आवश्यकता है। कार्यक्रम को डॉ राजेन्द्र सिंह आलुंजा, विक्रमसिंह महिडा, दिलीप सिंह राठौड़, भारतीय जनता पार्टी के पूर्व महामंत्री मदनसिंह आटोद्रिया तथा एडवोकेट केयुरसिह कोसम्बा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में सभी क्षेत्रों से आए हुए राजपूत समाज के गणमान्य बंधुओं ने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने एवं समाज सुधार के लिए किए जाने वाले कार्यों पर विमर्श किया। कार्यक्रम में मातृशक्ति द्वारा गरबा नृत्य की प्रस्तुति भी दी गई एवं तलवारबाजी व अन्य कार्यक्रम भी रखे गए। क्षेत्र में 13 से 15 अगस्त को आयोजित संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर को सभी के लिए प्रेरक बताते हुए क्षेत्र में और अधिक शिविर व शाखाएं लगाने के लिए दक्षिण गुजरात राजपूत समाज द्वारा प्रयास करने व समाज जागरण के लिए प्रयास करने की बात वक्ताओं द्वारा कही गई। कार्यक्रम के पश्चात स्नेहभोज का आयोजन भी किया गया। व्यवस्था का जिम्मा दक्षिण गुजरात राजपूत संकलन समिति के अध्यक्ष दिलीप सिंह राठौड़ ने सहयोगियों के साथ मिलकर संभाला।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	मा.प्र.शि. (बालिका)	16.10.2022 से 21.10.2022 तक	**सिवाणा**, बाड़मेर।
02.	मा.प्र.शि. (बालक)	16.10.2022 से 22.10.2022 तक	**बापिणी**, जोधपुर।
03.	मा.प्र.शि. (बालक)	16.10.2022 से 22.10.2022 तक	**बालोतरा (बाड़मेर)**, वीर दुर्गादास छात्रावास।
04.	मा.प्र.शि. (बालक)	17.10.2022 से 23.10.2022 तक	**बूचरा फार्म हाऊस**, पावटा जयपुर। सम्पर्क: धूड़सिंह-96943-38466
05.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	18.10.2022 से 21.10.2022 तक	**सकानी (आसपुर)**, डूंगरपुर।
06.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	19.10.2022 से 22.10.2022 तक	**बड़ली**, अजमेर। सुमेर कृषि फार्म बड़ली (विजयनगर)
07.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	19.10.2022 से 22.10.2022 तक	**कोटडा**, बांसवाड़ा।
08.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	19.10.2022 से 22.10.2022 तक	**केलपुंज माताजी का मंदिर**, किनसरिया (नागौर)।
09.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.10.2022 से 30.10.2022 तक	**मुम्बई (महाराष्ट्र)**।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	26.10.2022 से 29.10.2022 तक	**हाथीतला (बाड़मेर)**, बाड़मेर से धोरीमन्ना एनएच-68 पर रणसी होटल से 2 किमी दूर हाथीतला।
11.	मा.प्र.शि. (बालक)	26.10.2022 से 01.11.2022 तक	**आसकी ढाणी (नागौर)**, डीडवाना-सालासर रोड पर।
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.10.2022 से 30.10.2022 तक	**गलोट**, प्रतापगढ़।
13.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	28.10.2022 से 31.10.2022 तक	**डीडवाना (नागौर)**, शहर में।
14.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	28.10.2022 से 31.10.2022 तक	**चाकसू (जयपुर)**, अपनत्व-फ्यूचर जोन एकेडमी, चाकसू। सम्पर्क: अर्जुनसिंह गोनिया-98281-29675
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.10.2022 से 31.10.2022 तक	**हमीरा**, जैसलमेर।
16.	मा.प्र.शि. (बालक)	28.10.2022 से 03.11.2022 तक	**धोलेरा (अहमदाबाद)**, अहमदाबाद से भावनगर रूट पर।
17.	मा.प्र.शि. (बालिका)	28.10.2022 से 03.11.2022 तक	**धंधूका (अहमदाबाद)**, धोलेरा से 27 किमी. दूर।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	05.11.2022 से 08.11.2022 तक	**झालरापाटन (झालावाड़)**, आनन्द धाम नवलखा किला।
19.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	05.11.2022 से 08.11.2022 तक	**कोटा**।
20.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	06.11.2022 से 09.11.2022 तक	**कीता**, जैसलमेर।
21.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	11.11.2022 से 14.11.2022 तक	**फरीदाबाद**, हरियाणा।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	17.11.2022 से 20.11.2022 तक	**जानपुर**, उत्तरप्रदेश।
23.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	26.11.2022 से 28.11.2022 तक	**नैनावा (बनासकांठा)**, गुजरात।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

जमवाय माता की 24वीं पदयात्रा प्रारंभ

जयपुर के मालवीय नगर के चामुंडा माता मंदिर से जमवाय माता जमवारामगढ़ तक की 24वीं पदयात्रा 25 सितंबर को शाम 5:15 पर प्रारंभ हुई। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने स्थानीय विधायक कालीचरण सराफ के साथ यात्रा को हरी झंडी दिखाई। इस अवसर पर बद्री सिंह राजावत, भाजपा प्रदेश मंत्री श्रवण सिंह बगड़ी, ईश्वर सिंह सानिया, राजेश सिंह कोटवाद, जयपाल सिंह मांडोता सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

दिल्ली में पारिवारिक स्नेहमिलन सम्पन्न

दिल्ली के सुब्रोतो पार्क स्थित वेस्टर्न एयर कमांड में 26 सितंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ का पारिवारिक स्नेहमिलन आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने पूज्य तन सिंह जी और श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए बताया कि आज शक्ति की उपासना का पर्व प्रारंभ हो रहा है और हमारे पूर्वजों ने शक्ति की उपासना उसके गुणगान करके नहीं बल्कि उसे अपने जीवन में आमंत्रित करके की, संगठन शक्ति का उत्कृष्ट स्वरूप है, हर युग में सात्विक शक्तियों ने संगठित होकर संसार में व्यवस्था स्थापित की है और श्री क्षत्रिय युवक संघ भी इसी प्रकार हमारी सात्विक शक्तियों को संगठित कर शक्ति की उपासना करता है।

संघ अपने आप में एक विस्तृत परिवार है जो समाज में उन आदर्शों की पुनर्स्थापना कर रहा है जो हमारे पूर्वजों ने अचिंत्य बलिदान करके स्थापित किए थे। संघ ऐसे पारिवारिक स्नेहमिलन आयोजित करके समाज को पारिवारिक भाव में बांधने का कार्य कर रहा है। जब हम सब पूरे समाज को एक ही विस्तृत परिवार मानना प्रारंभ कर देंगे तो स्वतः ही हमारी सभी गतिविधियों समाज सापेक्ष बन जाएंगी और हम सब के ऐसे सामूहिक प्रयास से ही समाज शक्तिशाली बन सकता है। कार्यक्रम में उत्तराखंड, हिमांचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, गुजरात सहित विभिन्न प्रदेशों के दिल्ली में रहने वाले समाजबंधु सम्मिलित हुए।

सूरत व भादा शाखा में अधिकतम संख्या दिवस मनाया

सूरत प्रांत के गोडादरा मण्डल में श्री क्षत्रिय युवक संघ की दैनिक शाखा (वीर दुगार्दास शाखा) में 18 सितंबर को अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया। प्रान्त प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सह-प्रान्तप्रमुख भवानीसिंह माडपुरिया ने सूरत में लगने वाली दैनिक व साप्ताहिक शाखाओं की संक्षिप्त जानकारी दी। इसी प्रकार बापिणी मंडल में भादा गांव की बाण माता शाखा में भी अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया। विजय सिंह बेदू ने संघ की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताया।

तने सिंह काठा ने राष्ट्रीय संगोष्ठी में किया शोधपत्र का वाचन

जैसलमेर के काठा गांव निवासी इतिहास के प्राध्यापक तने सिंह ने उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय परिसर स्थित विक्रम कीर्ति मंदिर में नरेंद्र सिंह परमार द्वारा लिखित 'परमार (पंवार) राजवंश रत्न माला' ग्रंथ के विमोचन समारोह के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'सम्राट विक्रमादित्य परमार के वंशज - धाट (अमरकोट) व पारकर के सोढा राजपूत' नाम से शोध पत्र का वाचन किया। उक्त शोध पत्र में सम्राट विक्रमादित्य परमार के वंशजों के जागीर, गांवों आदि की जानकारी पौराणिक, ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक साहित्यिक तथ्यों व साक्ष्यों के साथ दी गई है।

लूणकरणसर में स्नेहमिलन तथा प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

बीकानेर के लूणकरणसर कस्बे में राजपूत समाज का स्नेहमिलन तथा प्रतिभा सम्मान समारोह 25 सितंबर को आयोजित हुआ। कार्यक्रम के दौरान समाज में फैली विसंगतियों एवं कुरीतियों को दूर करने के संबंध में चर्चा की गई। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष रविंद्र सिंह भाटी, एडवोकेट डॉ सुरेंद्र सिंह शेखावत, तिलम संघ के पूर्व निदेशक उमेद सिंह शेखावत, जुगल सिंह राठौड़, महिपाल सिंह लाखऊ, भानु प्रताप सिंह शेखावत आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली समाज की 150 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। महेंद्र सिंह शेखावत ने कार्यक्रम का संचालन किया।

करण सिंह रूपसी की सहायक आचार्य परीक्षा में 16वीं रैंक

जैसलमेर जिले के रूपसी गांव निवासी करण सिंह भाटी ने राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान) परीक्षा में राज्य में 16वां स्थान प्राप्त किया है। करण सिंह वर्तमान में अमर शहीद सागरमल गोपा उच्च माध्यमिक विद्यालय जैसलमेर में भूगोल विषय के व्याख्याता के रूप में सेवाएं दे रहे हैं।

दिव्याकृति सिंह ने की एशियन गेम्स 2022 की योग्यता

दिव्याकृति ने हाल ही में जर्मनी में आयोजित इण्टरनेशनल लुडविग्सबर्ग ड्रेसाज फेस्टीवल में भाग लिया और एशियन गेम्स के लिए निर्धारित योग्यता स्कोर अर्जित कर अपनी प्रतिभा का सराहनीय प्रदर्शन किया। वह देश की प्रथम अश्वरोही है जिसने एशियन गेम्स 2022 के लिए यह योग्यता हासिल की है। दिव्याकृति सिंह वरिष्ठ स्वयंसेवक कर्नल हिम्मतसिंह पीह की सुपौत्री है।

(पृष्ठ एक का शेष)

अनिल चौहान...

वे उत्तराखंड के जिला पौड़ी गढ़वाल के राजपूत परिवार से ताल्लुक रखते हैं। उन्होंने सेना में अपना सफर 1981 में गोरखा राइफल्स के साथ शुरू किया था और करीब 39 वर्षों के सेवाकाल में वे परम विशिष्ट सेवा मेडल के साथ ही उत्तम युद्ध सेवा मेडल और सेना मेडल से भी सम्मानित किए गए। वे स्वर्गीय विपिन रावत के बाद CDS नियुक्त होने वाले दूसरे राजपूत हैं।

आसूसिंह...

उत्तम दर्जे की सेवाओं, राष्ट्र के लिए अहम योगदान, समर्पित सेवा एवं सामरिक महत्व की उत्कृष्ट इंजीनियरिंग उपलब्धियों के लिए प्रख्यात इंजीनियर पुरस्कार प्रदान किया गया। नागौर जिले के लाछड़ी गांव के निवासी आशु सिंह वर्तमान में सीमा सड़क संगठन में उप महानिदेशक पद पर कार्यरत हैं और पूर्व में राष्ट्रपति द्वारा अति विशिष्ट सेवा मैडल तथा विशिष्ट सेवा मैडल से भी सम्मानित किए जा चुके हैं।

भविष्य की...

उपर्युक्त बात 25 सितंबर को मेजर साब की हवेली जोबनेर शाखा में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने कही। उन्होंने संघ के निर्माण की परिस्थितियों से लेकर वर्तमान समय तक की यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि अनेक लोगों ने निस्वार्थ भाव से अपना जीवन लगा कर इस कार्य को गतिमान रखा है। हमें भी उसी श्रृंखला में कड़ी बनकर जुड़ना है और त्याग व बलिदान की इस परंपरा को अक्षुण्ण रखते हुए समाज के उज्जवल भविष्य की नींव रखनी है। कार्यक्रम में जोबनेर के रावल संग्राम सिंह, दुर्गा सिंह बीचपडी व अन्य गणमान्य समाजबंधुओं व मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। दिक्षिता बोयल व राजेन्द्र सिंह मंढा ने शाखा की गतिविधियों व उसके महत्व के बारे में बताया। जगदीश सिंह दुजोद, प्रभु सिंह हरनावा व महेंद्र सिंह दौलतपुरा अन्य सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रांतप्रमुख देवेन्द्र सिंह बरवाली ने किया। कार्यक्रम के पश्चात माननीय संघप्रमुख श्री ने उपस्थित समाजबंधुओं को यथार्थ गीता पुस्तक भी वितरित की।

वीरवर जयमल मेड़तिया

अकबर चढ़ा चित्तौड़ पर,
प्रलय कोहराम लाने को।
किन्तु जयमल की शेष थी,
ज्वाला,मुगलों को जलाने को।।
शार्दूल बैठे गढ़ों में,
शिकार मुगलों के घात में।
कड़-कड़ कड़क उठी प्रचण्ड,
तलवार ज्यों उत्पात में।।
झर-झर बहती रण-सुरा,
समर वीणा का तार छिड़ा।
अचंभित यवनों सें,
एक-एक राजपूत वीर भिड़ा।।
चित्तौड़ युद्ध में नायक की,
प्रत्येक साँसें फूँकार थी।
उनकी असि की टंकारे,
रणलीला की हुँकार थी।।
भीषण समर में धूजा अम्बर,
भू पटकर धसी चली।
राजपूत वीरावतारों के,
चार करों से असि चली।।
चित्तौड़ के जौहर के अंगारे,
सदियों तक न बुझे थे।
कल्ला-जयमल युगल बकें,
चारभुजा बन जूझे थे।
रिपु मस्तक दलन हेतु,
थे राजपूत क्रुद्ध अधीर।
विभिन्न असि प्रहारों सें,
रणखेत हुए जयमल वीर।
देखा अरियों ने भैरवी,
वीरव्रतों का केसरिया।
अमर रहेगा इतिहास में,
राठौड़ जयमल मेड़तिया।।

मनु प्रताप सिंह चींचडौली

वरिष्ठ स्वयंसेवक स्वरूप सिंह जी भुरटिया का निधन

स्वरूप सिंह जी भुरटिया

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **स्वरूप सिंह जी भुरटिया** का 19 सितंबर 2022 को 68 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में संघ के कुल 76 शिविर किए जिनमें 18 उच्च प्रशिक्षण शिविर, 26 माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर तथा 32 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्मिलित हैं। 16 से 29 मई 1971 तक आयोजित बालसमंद उच्च प्रशिक्षण शिविर उनका पहला शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

(पृष्ठ एक का शेष)

सौहार्दपूर्ण वातावरण...

यदि किसी गलतफहमी के कारण ऐसी कोई बात पैदा हो भी गई है तो क्या हम साथ में बैठ कर बात नहीं कर सकते? आपस में बैठकर सौहार्द से बात करें और सौहार्द पूर्वक बात करने पर हर बात का हल निकलता है। इस प्रकार का वातावरण हमारे समाज का बनें, हमारे राष्ट्र का बनें ताकि पुनः हम विश्व गुरु बन सकें। विश्व गुरु बनने के लिए आज संसार का हर देश तैयार हो रहा है लेकिन वे कैसे तैयारी कर रहे हैं? वे हाइड्रोजन बम बना रहे हैं, एटम बम बना रहे हैं और उन हथियारों के द्वारा अपने आप को सुप्रीम बनाना चाहते हैं। भारत वह नहीं करना चाहता, बल्कि भारत तो सुख और शांति की सबको मिसाल देना चाहता है। भारत चाहता है कि हम सुखी रहें और अन्य लोगों को भी सुखी होने के लिए एक मार्ग बताएं जिस मार्ग पर चलकर लोग सुखी हो सकते हैं। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ भी क्षत्रियों के बीच में इस प्रकार का भाव पैदा कर रहा है कि हम अपने जीवन को सुधारें क्योंकि जब तक व्यक्ति स्वयं नहीं सुधरेगा तो दूसरों को क्या सुधारेगा? जब स्वयं सुधर जाएं तो हमारा सामाजिक दायित्व बनता है कि समाज में जो विखंडन फैल रहा है उसको दूर करने के लिए छोटे-छोटे प्रयास किए जाएं। उपर्युक्त बात 18 सितंबर को चित्तौड़गढ़ स्थित भारत बाग में श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित किसान सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने कही। उन्होंने कहा कि हम जानते हैं कि एक बने बनाए मकान को तोड़ना बहुत आसान है लेकिन नवनिर्माण करना बहुत मुश्किल है। इसीलिए आज हम जो बात करके जा रहे हैं इससे तुरंत कोई सुधार हो जाएगा इसकी कल्पना मत कीजिए लेकिन अगर हम इन बातों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे तो सुधार होगा। किसान वर्ग को इसलिए चुना गया क्योंकि अधिकांश लोग कृषि से जुड़े हुए हैं और इसीलिए किसानों के माध्यम से यदि हमारे गांव में ऐसा ही सौहार्द पनपता है, हम सभी जाति वाले एक दूसरे के साथ भाई बंधु की तरह रहना सीख जाते हैं तो यह भारत की बहुत बड़ी सेवा होगी। किसान ही ऐसा वर्ग है जो इस तरह की राह दिखा सकता है। उस राह को दिखाने के लिए जो कदम उठाया जा रहा है, इस कदम में आप सबका सहयोग चाहिए। यहां सौहार्द का जो भाव पैदा हो रहा है इस भाव को हमारे जीवन में उतारें, ऐसी श्री प्रताप फाउंडेशन की इच्छा है। आप सब यहां पधारे हैं, उसके लिए आपका स्वागत भी है, आपका धन्यवाद भी है और आपसे प्रार्थना भी है कि उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। भगवान हम सब को सद्बुद्धि दें और हमको सही मार्ग दिखाएं।

इससे पूर्व कार्यक्रम की भूमिका बताते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने कहा कि श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा आयोजित इस किसान सम्मेलन में सभी प्रकार के बंटवारों और विभाजनों को नकार कर किसान एक मंच पर आए हैं। पूज्य श्री तन सिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना भारतीयता के संरक्षण के लिए की। आज हम चित्तौड़गढ़ में बैठे हैं और भारतीयता का यदि कोई आदर्श स्वरूप देखना हो तो हमें चित्तौड़ की ओर देखना चाहिए। मेवाड़ का पूरा इतिहास भारतीयता का आदर्श है। चित्तौड़ ने एक हजार वर्ष तक संघर्ष किया। बप्पा रावल से प्रारंभ हुआ यह संघर्ष महाराणा राज सिंह तक लगातार चलता रहा। इतने लंबे संघर्ष में चित्तौड़ के बचे रहने का मूल कारण था - भारतीयता। इस भारतीयता के कारण ही प्रताप के आह्वान पर सभी चित्तौड़वासी लहलहाती फसलें छोड़कर प्रताप के साथ जंगलों में चले गए। चित्तौड़ की स्वतंत्रता का कारण यह भारतीयता ही थी जो सबको साथ लेकर चलती है, जो सम्मिलित शक्ति में विश्वास करती है, जो समाज के प्रत्येक अंश को अपने में समाहित करती है और जो विघटन की बात नहीं करती, जोड़ने की बात करती है। वही भारतीयता पूज्य श्री तन सिंह जी का आदर्श थी इसीलिए संघ और उसके आनुषंगिक संगठन कुछ प्राप्त करने के लिए नहीं बने हैं, बल्कि राजपूत समाज को उसके दायित्व का शिक्षण देने के लिए बने हैं। उसी दायित्व की एक कड़ी यह है कि जो भारतीयता हमारे समाज से कम होती जा रही है, हमारे राष्ट्र से समाप्त होती जा रही है, उस भारतीयता को पुनः आमंत्रित किया जाना चाहिए। आज स्थितियां ऐसी हैं कि छोटी-छोटी बातों में हमेशा से साथ रहने वाले समाज भी एक दूसरे के सामने खड़े हो जाते हैं। इस विखंडन को रोकने और भारतीयता को माध्यम बनाकर समाज को पुनः जोड़ने वाले तत्वों को विकसित करने का ही एक प्रयास है किसान सम्मेलनों की यह श्रृंखला। उन्होंने आगे कहा कि किसान वर्ग का चयन इसलिए किया गया क्योंकि जैसे गीता हम सब को जोड़ती हैं वैसे ही कृषि भी हम सब को जोड़ती है। हमारे गांव में कोई भी परिवार ऐसा नहीं होगा जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़ा हुआ नहीं हो दुर्भाग्य से राजनीति में किसान शब्द का भी दुरुपयोग किया गया जबकि वास्तव में किसान शब्द किसी एक जाति, वर्ग, पूजा पद्धति, पंथ विशेष अथवा राजनीतिक विचारधारा से जुड़ा हुआ नहीं है बल्कि यह भारतीयता से जुड़ा हुआ है और इसीलिए यह इतना बड़ा आधार हैं जिसको लेकर हम सभी एक साथ बैठ सकते हैं। और ज्यों ही हम साथ बैठना प्रारंभ करेंगे, सौहार्दपूर्ण ढंग से आपस में संवाद कर विषयों को समझना प्रारंभ करेंगे, त्यों त्यों हमारा यह विघटन कम होता जाएगा और हम भारतीयता की ओर बढ़ते जाएंगे। आजादी के बाद से सबसे अधिक किसी वर्ग के हित की बात कही गई है तो वह किसान है लेकिन सबसे ज्यादा दुर्दशा भी किसान वर्ग की ही हुई है। इसका कारण यही है कि किसान राजनीतिक आधार पर बंट गए। इस बंटवारे को समाप्त किया जाए और हम किसान शब्द की व्यापकता को समझें, इस उद्देश्य के साथ ही यह सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में जौहर स्मृति संस्थान के अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह, स्थानीय सांसद सीपी जोशी, विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, पूर्व मंत्री श्री चंद कृपलानी, पूर्व विधायक बद्रीलाल जाट सिंहपुर, डॉक्टर आई एम सेठिया, लक्ष्मण सिंह खोर, भूपेंद्र सिंह बडोली, हेमेंद्र सिंह राणावत, देवेंद्र कंवर, सुशीला कंवर आक्या, गब्बर सिंह अहीर सहित अनेकों गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। बृजराज सिंह खारड़ा व नरपत सिंह भाटी ने कार्यक्रम का संचालन किया। विभिन्न समाजों के प्रतिनिधि के रूप में कैलाश गुर्जर सामरी, लीलाधर जोशी, रतन लाल धाकड़, देवीलाल गायरी, मिठू लाल रेबारी, माधव लाल बैरवा, ठाकुर सिंह रावत, गुड्डू लाल सुथार, बगदीराम प्रजापत, रमेश सालवी, रतन लोहार आदि ने इस विषय पर अपनी बात रखी और श्री प्रताप फाउंडेशन की इस पहल को अनुकरणीय बताया। समारोह के बाद 15 सूत्री मांग पत्र सर्वसम्मति से सरकार के नाम जिला प्रशासन को दिया गया। कार्यक्रम में जिले के सभी जाति समाजों के प्रतिनिधि एवं हजारों लोग उपस्थित हुए। कार्यक्रम में आये सभी किसानों को संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा भेजी गई यथार्थ गीता भी वितरित की गई।

(पृष्ठ दो का शेष)

26 शिविरों के... पुखराज सिंह गिराजसर ने ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का दायित्व संभाला। श्री साधना संगम संस्थान, कुचामन सिटी के तत्वावधान में श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक शिक्षण शिविर लाडनूं प्रांत के सुजानगढ़ मंडल के बामणिया गांव में सती माता मंदिर के प्रांगण में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी ने सभी जातियों, धर्म और संप्रदायों का सम्मान करते हुए त्यागमय जीवन जीने की बात कही। शिविर में बामणिया, राजियासर मीठा, राजियासर खारा, बोबासर, न्यामा, चारिया, साजनसर, तेहनदेसर, मलसीसर, बंडवा आदि गांवों के 95 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। नागौर संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा व जयपुर संभाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। मालसिंह, मदन सिंह, महेन्द्र सिंह सहित सभी ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। जैसलमेर संभाग में डांगरी गांव में 25 से 28 सितंबर तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए रतन सिंह बडोड़ा गाँव ने कहा कि केसरिया ध्वज यह ध्वज हमारी सनातन परंपरा का वाहक है, गौरव है। इसकी साक्षी में हमें अपने महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उपयोगी बनाने का अभ्यास करते रहना चाहिए। शिविर में डांगरी, मूलाना, भैंसड़ा, राजगढ़, राजमथाई, भणियाणा, मेहरेरी, नेड़ान, फलसूण्ड, बडोड़ा गाँव, बालाना, बेतीना आदि गांवों के 125 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। जालौर संभाग के सिरोही प्रांत में फलवदी गांव में भी 24 से 27 सितंबर तक शिविर का आयोजन हुआ। प्रांत प्रमुख ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों को कहा कि स्वयं का निर्माण किए बिना समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता। शिविर में फलवदी, वडवज, केसुआ, कैलाश नगर, तवरी, कुआडा आदि गांवों के 45 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। मंगल सिंह व हमीर सिंह ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रांत में जगन्नाथपुर गांव स्थित राजपूत समाज भवन में 24 से 26 सितंबर की अवधि में तीन दिवसीय शिविर संपन्न हुआ जिसमें भैंसाना, बिलिया, जगन्नाथपुरा, नंदाली, करली, नेदरा, कांसा, करणपुर, जासका, मेवड, कहोडा, भुन्नाव, कामली आदि गांवों के 80 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन वनराज सिंह भैंसाना ने किया। उन्होंने कहा कि इस संसार के कलुषित वातावरण से हम इस पवित्र वातावरण में आए हैं तो यहां से जो कुछ मिला है उस पर मनन करें, चिंतन करें और अपने जीवन को उस अनुसार ढालें। ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। मेहसाणा प्रांत में ही इसी अवधि में कामली गांव स्थित श्री ब्रह्माणी माताजी मंदिर परिसर में बालिकाओं का प्रशिक्षण शिविर भी संपन्न हुआ जिसमें कामली, जगन्नाथपुरा, नंदाली, कहोड़ा, खारी बावड़ी, चंद्रावती, करणपुर, जास्का, मोडासा, लिंबोनी, गांधीनगर, शिंही, नेद्रा, मोटा रामनदा, दद्धियाल, कांसा आदि गांवों से 83 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए जागृति बा हरदासकाबास ने पद्मिनी, मीराबाई, हाड़ी रानी जैसी क्षत्राणियों के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। उत्तर गुजरात संभाग के बनासकांठा प्रांत में चारडा गांव में भी 24 से 26 सितंबर तक अनुपम प्राथमिक शाला के परिसर में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर संचालक इंद्रजीत सिंह जेतलवासणा ने शिविरार्थियों से कहा कि संघ हमें माता की भांति प्रेमपूर्ण ढंग से वह शिक्षण देता है जिसमें हमारा वास्तविक हित है। संघ से मिले इस स्नेह को हमें आगे समाज में बांटना है। शिविर में चारडा, पीलुडा, नारोली, वलादर, मेमदपुर, फतेपुर, भापी, चारंडा, काणोठी, फोरणा, नालोदर, मालोजना, वरणोसरी, जेलाणा, शिया, धोता, पर, पांथावाडा, टेकरा, ईढाटा, आरखी, लाडपुर, दियोदर, गोलगाम, ससम, गोला, जाणावाडा, करबुण, हेबतपुरा, बाबरा, जेतलवासणा आदि गांवों के 185 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। डॉ प्रवीण सिंह चारडा व समस्त ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। महाराष्ट्र संभाग के पुणे प्रांत के पिंपरी चिंचवड़ में भी इसी अवधि में तीन दिवसीय शिविर आयोजित हुआ। संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाना ने शिविर का संचालन करते हुए समाज हित में संगठित रहने और अपने भीतर सद्गुणों को उतारने की बात कही। पुणे, मुंबई, हैदराबाद के 70 युवाओं ने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। राजस्थान राजपूत समाज पिंपरी चिंचवड़ के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के हालार प्रांत में भी दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 10 से 12 सितंबर की अवधि में संपन्न हुए। रतनपुर गांव में बालिका शिविर आयोजित हुआ जिसका संचालन उर्मिला बा पछेगांव ने किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि मर्यादाओं के पालन में ही महानता होती है। यदि हम संघ के शिविर में बताई गई छोटी-छोटी मर्यादाओं का पालन करें तो हमारे जीवन में निश्चित रूप से श्रेष्ठता आएगी। शिविर में रतनपर, कोटड़ा, शिसांग, खाखरा, बेला, हड़मतिया, चनोसरा, भावनगर, तलाजा, चूड़ी, बाड़ी, मोरचंद से 70 स्वयंसेविकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी प्रकार कोटडा नायाणी गांव स्थित बाबा रामदेव मंदिर में बालकों का तीन दिवसीय शिविर संभाग प्रमुख प्रवीण सिंह धोलेरा के संचालन में संपन्न हुआ। उन्होंने शिविरार्थियों से इतिहास से प्रेरणा लेकर अपने पूर्वजों की भांति त्याग और बलिदान के मार्ग पर चलते हुए समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा की बात कही। शिविर में शिशांग, रतनपर, कोटडा नायाणी, अवाणीया, खाखरा बैला, खोखरी, धोलेरा, चनोल आदि गांवों के 60 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी प्रकार जैसलमेर के कोटड़ी में 25 से 26 सितम्बर तक ईश्वरसिंह बैरसियाल के संचालन में शिविर हुआ। जिसमें 107 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर से **छात्रसंघ अध्यक्ष** पद पर

अरविंद सिंह भाटी (अवाय)

को विजयी होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

मोतीसिंह जोधा -छात्र प्रतिनिधि, JNVU
अरविंद सिंह भाटी - छात्रसंघ अध्यक्ष , JNVU
रविंद्र सिंह भाटी , पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष, JNVU

शुभेच्छु

बाबूसिंह सोनू	भोमसिंह तिबनियार	गिरधरसिंह चेलक	ओम सिंह हाथीतला
रघुवीरसिंह जाफली	शंकरसिंह राजमथाई	नारायणसिंह आंईता	प्रहलादसिंह सोनू
सज्जनसिंह कोटड़ा	मोकम सिंह फुलिया	दिलीप सिंह गड़ा	भोम सिंह फलसूंड
मालमसिंह सांथू	कर्णसिंह मूठली	अजीतसिंह कुकनवाली	छत्तरसिंह मालूंगा
दयालसिंह राग्रना	भंवरसिंह निम्बोला	निम्बसिंह भाड़ली	सवाईसिंह धुड़िला

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org